11

i|:"k lDr

जब आप बच्चे थे तब आपके पित ही आपके लिए सब कुछ थे। वे आपको सब जरूरत की वस्तुएं देते थे। परिवार को सुरक्षा प्रदान करते थे, आपको भावनात्मक सहयोग प्रदान करते थे। एक तरह से कहें तो आपके सभी पक्षों को ध्यान रखते थे। इसी तरह से आपकी मां जो भी आप चाहते थे उसकों प्राप्त करना आपके लिए संभव बनाती थी। आपके लगभग घर के सभी कार्य करती थी। मूलतः वह घर को संभालती थी। वह खाना पकाती थी, सफाई करती थी, सारी व्यवस्था करती थी, सहायता करती थी। अपको मार्गदर्शन प्रदान करती है और आपके लिए क्या–क्या नहीं करती थी? और यह सब अब भी करते हैं। क्या आप नही सोचते कि आपके लिए माता–पिता ही सबकुछ है?

जब आप बड़े होते हैं, चीजें अपने आपसे संभालने लगते है, तो आपके माता–पिता, आपके लिए सब कुछ नहीं होते। आप देखेंगे कि आपके अध्यापक, प्रबंधक, प्रधानाचार्य और गांव–पंचायत के कर्मचारी आदि कुछ कार्यों में आपके माता–पिता से भी ज्यादा सक्षम होते है। परंतु आपके माता–पिता के जितना आपके विषय में दूसरा अन्य कोई भी आपकी देखभाल नहीं करता है। क्या ऐसा नहीं है?

इस धरा के विद्वन्जनो ने यह परिकल्पना कर ली थी कि ऐसी कोई बहुत बडी शक्ति है जो सब कुछ कर सकने में सक्षम है। यह कार्य करने के लिए हजारों अंग–उपांग देखने के लिए आँखे, सुनने के लिए कर्ण युक्त है। यह ही पुरूष–सूक्त का सार है।

पुरूष–सूक्त में पुरूष (सृष्टि के अस्तित्व कर्ता) की विशेषताओं को बहुत ही सुन्दर ढंग से व्याख्यायित किया गया है। कुछ भी करने में सक्षम शरीर को वेद में पुरूष कहा गया है। अनेक तरह के पुरूष कहे गये है जैसे– वास्तुपुरूष, राष्ट्रपुरूष, यज्ञपुरूष, समाजपुरूष आदि।

mÌ';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- पुरूष सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- पुरूष सूक्त का मूलभाव समझ पाने में ।

iq:"k lDr

11.1 iq:"k lDr

अथ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ तच्छं॒ योरावृ॑णीमहे । गा॒तुं य॒ज्ञाय॑ । गा॒तुं य॒ज्ञप॑तये । दैवी॑ स्व॒स्तिर॑स्तु नः ।

स्व॒स्तिर्मानु॑षेभ्यः । ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भेष॒जम् । शन्नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॑ । शं चतु॑ष्पदे ।

ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः । स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ।

स भूमि॑ं वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा । अत्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् । १ ।

sa̱hásra śīrṣā̱ purúṣaḥ | sa̱hasrā̱kṣas sa̱hasrá pāt |

sa bhūmíṁ vi̱śvató vṟtvā | atyátiṣṭhad daśāṅgu̱lam || 1 ||

उस विराट् पुरुष के सहस्र शिर, सहस्र नेत्र और सहस्र हाथ–पैर हैं। वह समस्त भूमि को सब ओर से व्याप्त करके इस ब्रह्मण्ड से दश अंगुल ऊपर उससे परे विद्यमान है।

पुरु॑ष ए॒वेदꣳ सर्व॑म् । यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म्।

उ॒ता॒मृ॑त॒त्वस्येशा॑नः । यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति । २ ।

purúṣa e̱vedaguṁ sarvaṁ̈ | yad bhū̱taṁ yac ca bhavyaṁ̈ |

u̱tāmṟta̱tva syeśā̄nah | ya̱d annénā ti̱roháti || 2 ||

यह जगत् पुरुष ही सर्वभूत है। भूत, भविष्य और वर्तमान में वहीं है।

वह अमृतत्व का और अन्न से जीवित रहने वाले समस्त जीवों का ईश (पालक) है।

ए॒तावा॑नस्य महि॒मा । अतो॒ ज्याया॑ꣳश्च॒ पूरु॑षः ।

पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ । त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि । ३ ।

etāvā̍n asya mahimā | ato jyāyāgu̍ś ca pūru̍ṣaḥ |

pādő’sya viśvā̍ bhū̱tāni̍ | tri̱pād a̍syā̱m ṛta̍m di̱vi || 3 ||

इतना विशाल विराट् ब्रह्माण्ड उस परम पुरुष की महिमा है। वह अपने विभूति विस्तार से भी महान् हैं। उसकी एक पाद विभूति में ही सम्पूर्ण पंचभूतात्मक ब्रह्माण्ड है। शेष जो त्रिपाद विभूति हैं उनमें अमृत दिव्यलोक है।

त्रि॒पादू॒र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः । पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑ ।

ततो॒ विश्व॒ङ्व्य॑क्रामत् । सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि । ४ ।

tri̱pād ū̱rdhva udai̱t puru̍ṣaḥ | pādő’sye̱hā’’bha̍vā̱t puna̍ḥ |

tato̱ viśva̱ṅ vya̍krāmat | sā̱śa̱nā̱na̱śa̱ne a̱bhi || 4 ||

वह परमपुरूष इस जगत् से परे त्रिपाद विभूति में प्रकाशमान है। उसके एक पाद में ही यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकट हो जाता है। वह सम्पूर्ण विश्व को परिव्याप्त अपने में किये हुए है। प्राणवान, अप्राणवान, जड़, चैतन्य यह समस्त जगत उसी से है।

तस्मा᳚द्वि॒राड॑जायत । वि॒राजो॒ अधि॒ पूरु॑षः ।

स जा॒तो अत्य॑रिच्यत । प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः । ५ ।

tasmā̈d virāḍ ájāyata | virājo adhi pūrúṣaḥ |

sa jāto atyáricyata | paścād bhūmim athó puraḥ || 5 ||

उसी आदि पुरुष से महाविष्णु विराट् हुआ। उस विराट् का अधिपुरुष वही है। वह अधिपुरुष उत्पन्न होकर अत्यन्त दीप्त प्रकाशवान हुआ। उसने उत्पन्न होने के उपरांत भूमि तथा शरीरादि उत्पन्न किये।

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा᳚ । दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत ।

व॒स॒न्तो अ॑स्यासी॒दाज्य᳚म् । ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः । ६ ।

yat purúṣeṇa haviṣā̈ | devā yajñam atánvata |

vasanto ásyāsīd ājyam̈ | grīṣma idhmaś śarad-haviḥ || 6 ||

उस पुरुष से ही देवताओं ने हविष की कामना करके यज्ञ का विस्तार किया। उस यज्ञ में बसंत ऋतु घृत, ग्रीष्म ऋतु ईंधन और शरद ऋतु हवि हुई।

स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॑ः । त्रिः स॒प्त स॒मिध॑ः कृ॒ताः ।

दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒नाः । अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम् । ७ ।

saptāsyásan paridhāyáḥ | tris sapta samidháḥ kṛtāḥ |

devā yad yajñam tánvānāḥ | abádhnan purúṣam paśum || 7 ||

जिस पुरुष पशु का यज्ञ में बंधन करके देवताओं ने यज्ञ किया, उस यज्ञ में सात (छंद) इसकी परिधियां मान लीं और इक्कीस (12 महीने, 5 ऋतुएं, 1 आदित्य तथा 3 लोक या 3 अग्नि) समिधाएं बनीं।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् । पुरुषं जातमग्रतः ।

तेन देवा अयजन्त । साध्या ऋषयश्च ये । ८ ।

tam yajñam barhiṣi praukṣán | purúṣam jātam ágrataḥ |

tená devā ayájanta | sādhyā ṛṣáyaś ca ye || 8 ||

सृष्टि से पहले प्रकट हुए उस यज्ञ साधनभूत पुरुष को कुशाओं द्वारा प्रोक्षण करके उसी पुरुष के द्वारा देवता, साध्यगण तथा ऋषिगण आदि ने उस मानस यज्ञ का यजन किया।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः । संभृतं पृषदाज्यम् ।

पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यान् । आरण्यान्ग्राम्याश्च ये । ९ ।

tasmā̃d yajñāt sárva hutáḥ | sambhṛ́taṁ pṛṣad ājyam |

paṣūguṁs tāggaś cákre vāyavyāń | āraṇyān grāmyāśca ye || 9 ||

उस सर्वहुत यज्ञ से घृत आदि प्रशस्त पोषक पदार्थ उत्पन्न हुए। उस प्रजापति पुरुष ने नभचर (पक्षी आदि) ग्राम में रहने वाले, अरण्य में रहने वाले आदि पशुओं को उत्पन्न किया।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः । ऋचः सामानि जज्ञिरे ।

छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मादजायत । १० ।

tasmā̎d ya̱jñāt sárva̱ hu̱taḥ | ṛca̱ḥ sāmā́ni jajñire |
chandāgúṁsi jajñire̱ tasmā̎t | yaju̱s tasmā́d ajāyata || 10 ||

उस सर्वहुत यज्ञ पुरुष से ऋग्वेद तथा सामवेद उत्पन्न हुए। उसी से छन्द उत्पन्न हुए, उसी से यजुर्वेद प्रकट हुआ।

तस्मा॒दश्वा॑ अजायन्त । ये के चो॑भ॒याद॑तः ।

गावो॑ ह जज्ञिरे॒ तस्मा॑त् । तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒वयः॑ । ११ ।

tasmā̱d aśvá ayājanta | ye ke cóbha̱yādátaḥ |
gavó ha jajñire̱ tasmā̎t | tasmā̎j jā̱tā ájā̱ vayáḥ || 11 ||

उसी यज्ञ पुरुष द्वारा घोड़े उत्पन्न हुए। जिनके दोनों ओर दांत हैं, ऐसे पशु भी उत्पन्न हुए। उसी से गौएं तथा भेड़–बकरियाँ (अजादि) भी उत्पन्न हुईं।

यत्पुरु॑षं॒ व्य॑दधुः । क॒ति॒धा व्य॑कल्पयन् ।

मुखं॒ किम॑स्य॒ कौ बा॒हू । कावू॒रू पादा॑वुच्येते । १२ ।

yat purúṣaṁ vyádadhuḥ | ka̱ti̱dhā vyákalpayan |
mukha̱ṁ kim ásya kau bā̱hū | kā vū̱rū pādā́ vucyete || 12 ||

उस प्रजापति विराट् पुरुष को अनेक रूप से प्रकट करने पर उनकी अनेक प्रकार से कल्पना की। इस पुरुष का मुख क्या है? इसकी दोनों बाहें क्या हैं ? इसकी जंघाएं क्या हैं ? इसके पैर क्या कहे जाते हैं ?

ब्रा॒ह्म॒णो॑ऽस्य॒ मुख॑मासीत् । बा॒हू रा॑ज॒न्यः॑ कृ॒तः ।

ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑ । प॒द्भ्याꣳ शू॒द्रो अ॑जायत । १३ ।

brā̲hma̲ṇŏ'sya̲ mukhám āsīt | bā̲hū rā́ja̲nyáḥ kṛ̲taḥ |

ū̲rū tad ásya yad vaiśyáḥ | pa̲dbhyāguṁ śū̲dro ájāyata || 13 ||

इस पुरुष के मुख से ब्राह्मण (विद्वान जन) हुए, बाहुओं से क्षत्रिय (वीरता प्रधान पुरूष) हुए। इस पुरुष के जो दोनों उरु हैं उनसे वैश्य (व्यवस्तयिक जन) और पैरों से शूद्र (सेवक जन) प्रकट हुए।

च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तः । चक्षो॒ः सूर्यो॑ अजायत ।

मुखा॒दिन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ । प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत । १४ ।

ca̲ndramā̲ manáso jā̲taḥ | cakṣo̲s-sūryo ajāyata |

mukhā̲d indráś cā̲gniś cá | prā̲ṇ̲ād vā̲yur ájāyata || 14 ||

उनके मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुए, चक्षु से सूर्य, कानों से वायु तथा प्राण हुए और मुख से अग्निदेव उत्पन्न हुए।

नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षम् । शी॒र्ष्णो द्यौः सम॑वर्तत ।

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॑त् । तथा॑ लो॒काꣳ अ॑कल्पयन् । १५ ।

nābhyá āsīd a̲ntarikṣam | śī̲rṣ̣o dyaus samávartata |

pa̲dbhyāṁ bhūmi̲r diśa̲ś śrotrā̆t | tathá lo̲kāguṁ ákalpayan || 15 ||

उस यज्ञ पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष लोक प्रकट हुआ, शिर से स्वर्गलोक उत्पन्न हुआ, पैरों से पृथ्वी और कानों से दिशाएं उत्पन्न हुईं। इसी प्रकार उस परम पुरुष में ही ये सब लोक कल्पित मिये गये है।

वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑म् । आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑सस्तु॒ पा॒रे ।

सर्वा॑णि रू॒पाणि॑ वि॒चित्य॒ धीर॑ः । नामा॑नि कृ॒त्वाऽभि॒वद॒न् यदास्ते॑ । १६ ।

vedāham etaṁ puruṣaṁ mahāntam̐ | āditya varṇaṁ tamasas tu pāre |

sarvāṇi rūpāṇi vicitya dhīraḥ | nāmāni kṛtvā'bhivadan yadāstĕ || 16 ||

मैं उस परम पुरूष को जानता हूँ, जो अन्धकार से परे सूर्य के समान प्रकाशमान है। उसने ही विभिन्न रूप और शब्दावलियों (नामों) का निर्माण किया है। वह ज्ञान मय है, उसे मैं नमन करता हुँ।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॑दाज॒हार॑ । श॒क्रः प्रवि॒द्वान्प्र॒दिश॒श्चत॑स्रः ।

तमे॒वं वि॒द्वान॒मृत॑ इ॒ह भ॑वति । नान्यः पन्था॒ अय॑नाय विद्यते । १७ ।

dhātā purastād yam udājahārá | śakraḥ pravidvān pradiśaś-catásraḥ |

tam evā vidvān amṛtá iha bhavati | nānyaḥ panthā ayánāya vidyate || 17 ||

प्राचीन समय में प्रजापति (ब्रह्म) ने उसकी प्रशंसा की। इन्द्र जो चारों दिशाओं के ज्ञाता थे । उन्होंने भी उनके विषय में कहा। इस तरह जो भी कोई उसे जानता है, इसी जीवन में अमृत्व को प्राप्त करता है मुक्ति का इसके अलावा दुसरा कोई पथ नहीं है।

यज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः । तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन् ।

ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते । यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः । १८ ।

ya̱jñena ya̱jñam ȧyajanta de̱vāḥ | tāni̱ dharmǡṇi pratha̱mā-nyǡsan |

te ha̱ nākȧṁ mahi̱mānȧs sacante | yatra pūrvė sā̱dhyās santi de̱vāḥ || 18 ||

देवगण यज्ञ के द्वारा उस यज्ञ पुरुष का यजन करते हैं। इन धर्मों का अस्तित्व प्रथम कल्पों (न्याय) में भी था। जहाँ पर पूर्व के महिमावान देवगण रहते थे, उसी में उनके उपासक भी पहुंचते हैं।

11.2 iq:"k lDr % mÙkj vuqokd

अ॒द्भ्यः संभू॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च । वि॒श्वक॑र्मणः॒ सम॑वर्त॒ताधि॑ ।

तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति । तत्पुरु॑षस्य॒ विश्व॒माजा॑न॒मग्रे॑ । १ ।

a̱dbhyas saṁbhūtaḥ pṛthi̱vyai rasȁcca | vi̱śvȧkarmaṇa̱s samȧvarta̱tādhi |

tasya̱ tvaṣṭǡ vi̱dadhȧd rū̱pam-ėti | tat purȧṣasya̱ viśva̱m ājǡna̱m agrė̈ ||

आगे जल, भूमि और काल से रस उत्पन्न हुआ। उस रस रूप (तद्रूप) को ग्रहण करते हुए आदित्य प्रतिदिन उदित होते हैं। मनुष्यों की सृष्टि से भी आगे देवताओं को रचा। उस पुरूष से ही एक देवता होते हैं, एक सृष्टि (ब्रह्मण्ड) के आदि में उत्पन्न आजान (प्रधान) देवता होते हैं।

वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑म् । आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑स॒ः पर॑स्तात् ।

तमे॒वं वि॒द्वान॒मृत॑ इ॒ह भ॑वति । नान्यः पन्था॑ विद्य॒तेय॑ऽनाय । २ ।

ve̱dāham e̱taṁ purúṣaṁ ma̱hāntam̐ | ā̱di̱tya várṇa̱ṁ tamása̱ḥ parástāt |

tam e̱vaṁ vi̱dvān a̱mṛtá i̱ha bhávati | nānyaḥ panthā́ vidya̱te'yánāya ||

मैं इस महान् पुरुष को जानता हूं जो आदित्य की तरह प्रकाशमान है और जो तम से परे है। विद्वान (ज्ञानी जन) उसी पुरूष को जानकर अमृत्व का प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त कोई अन्य ज्ञान का पथ नहीं है।

प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ अ॒न्तः । अ॒जाय॑मानो बहु॒धा विजा॑यते ।

तस्य॒ धीरा॒ः परि॑जानन्ति॒ योनि॑म् । मरी॑चीनां प॒दमि॑च्छन्ति वे॒धस॑ः । ३ ।

pra̱jāpátiś carati̱ garbhé a̱ntaḥ | a̱jāyámāno bahu̱dhā vijā́yate |

tasya̱ dhīrā̱ḥ parijānanti̱ yonim̐ | marīcīnāṁ pa̱dam icchanti ve̱dhasaḥ ||

वह प्रजापति (सृष्टि कर्ता) सृष्टि के गर्भ मे स्थान ग्रहण करता है। अजन्मा वह कई भिन्न तरीकों से जन्म लेता है। बुद्धिजन उसकी प्रकृति और उत्पति को जानते है। कर्ता मरीचि और अन्यों का स्थान प्राप्त करने की कामना करते है।

यो दे॒वेभ्य॒ आत॑पति । यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः ।

पूर्वो॒ यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तः । नमो॑ रु॒चाय॒ ब्राह्म॑ये । ४ ।

yo de̱vebhya̱ ātapáti | yó de̱vānā̆m puro̱hitaḥ |

purvo̱ yo devebhyó jā̱taḥ | namó ru̱cāya̱ brāhmáye ||

जो प्रजापति देवताओं को तेजमय बनाता है, जो देवताओं का पुरोहित है, जो देवताओं के पूर्व प्रकट हुआ है, उस ब्रह्मी दीप्ति वाले देव को मेरा नमस्कार है।

रुचं॑ ब्रा॒ह्मम् ज॒नयं॑न्तः । दे॒वा अग्रे॒ तद॑ब्रुवन् ।

यस्त्वै॒वं ब्रा॑ह्म॒णो वि॒द्यात् । तस्य॑ दे॒वा अस॒न् वशे॑ । ५ ।

rucaṁ brāhmaṁ janayántaḥ | devā agre tad ábruvan |

yas tvaivaṁ brāhmaṇo vidyāt | tasyá devā asan vaśë ||

ब्रह्म से जायमान देदीप्यमान ज्योति स्वरूप आदित्य को प्रकट करते हुए, देवता ने पूर्व में कहा था– जो ज्ञानी जन तुम्हें जानेंगे, देवता भी उनके वश में होंगे।

ह्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्यौ॑ । अ॒हो॒रा॒त्रे पा॒र्श्वे ।

नक्ष॑त्राणि रू॒पम् । अ॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म् । इ॒ष्टम् म॑निषाण ।

अ॒मुं म॑निषाण । सर्व॑म् मनिषाण । ६ ।

hrīś cá te lakṣmīś ca patnyaü | aho rātre pārśve |

nakṣátrāṇi rūpam | aśvinau vyāttaṁ | iṣṭaṁ mániṣāṇa |

amuṁ mániṣāṇa | sarváṁ maniṣāṇaḥ || 24 ||

हे प्रभो! श्री देवी और श्री लक्ष्मी देवी ये आपकी पत्नियाँ हैं। दिन और रात्रि आपके पार्श्व हैं। नक्षत्र आपके रूप हैं। पृथ्वी, स्वर्ग, मुख, विकास

हैं। हमें आप प्रेम करते हैं। इसलिए हमेशा ही हमारा अभ्युदय चाहेंगे। मैं सर्वलोकात्मक हो जाऊं, ऐसी मेरी आपसे प्रार्थना है।

ॐ तच्छं योरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवीस्स्वस्तिरस्तु नः ।

स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शन्नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

हमें सभी प्राणियों के कल्याण के लिए उस परम सत्ता से कामना करते हैं। हमारे दुःख और कमियां हमेशा के लिए हम से दूर हो जायें ताकि हम अग्नि पर्थ पर उस परम सत्ता के गीत गा सकें। सभी औषधियों उन्नत हों ताकि सही बीमारियों का इलाज हो सके। भगवान हम पर शांति की वर्षा करे। सभी दो पैरों वाले, चार पैरों वाले प्राणी खुश रहें। सभी के अन्तःकरण में शांति रहे।

ikBxr i|'u& 11-1

I. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. परम पुरूष के कितने शीर्ष हैं ?
2. अंतरिक्ष लोक कहां से उत्पन्न हुआ ?
3. विराट् किससे उत्पन्न हुआ हैं ?
4. पुरूष के मुख में कौन उत्पन्न हुए?
5. चन्द्रमा कहाँ से उत्पन्न हुए ?

d{kk & 5

fVIi.kh

vkiu D;k lh[kk\

- पुरूष सूक्त का उच्चारण करना।
- पुरूष सूक्त का अर्थज्ञान।

ikBkr i'u

1. पुरूष सूक्त के अनुसार विराट रूप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

mÙkjekyk

11.1

I. 1. सहस्रशीर्षा

2. पादो

3. पुरुषात्

4. ब्राह्मणः

5. मनसः